



बढ़ते कदम

वर्ष-16
अंक-12
2017-18

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी

बसंत अंक



छायाचित्र

दिनांक 08/03/2018 को मंडल रेल प्रबंधक अपने मंडल की महिला कार्मिकों साथ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के आयोजन पर वृक्षारोपण करते हुए परिलक्षित हैं।



विषय वस्तु

प्रसंगवश—

— सुधांशु कुमार विश्वास —	3
ऋतुराज बसंत —	
— संजीव कुमार	4
विभिन्नता में एकता	
— कैलाश चंद्र धारिया	6
महिला सशक्तिकरण	
— सुप्रिया राय	7
विश्व में कितने...—	
— सच्चिदानंद	8
व्यक्तित्व और रंग	
— श्वेता दूबे	10
नारी का सम्मान	
— रीतेश कुमार सिंह	13
मुखिया—	
— मैनेजर साह	14
राजभाषा समारोह... —	
— इंद्र ज्योति राय	15
चलो आज मनाएं होली	
— विजय कुमार	17
नया सवेरा	
— अशोक आशीष	17
स्मार्टफोन —- शुर्भेंदु	18
ऋतुराज— शैलेंद्र राम	18
छाया चित्र	19
चित्र विथिका	20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)
Email – rajbhasha.malda@gmail.com

Whatsup 7044575977///7319444518

कालिदास का ऋतुसंहार

ऋतुसंहार महाकवि कालिदास का एक विख्यात काव्य है। महाकवि कालिदास की प्रथम काव्यरचना ऋतुसंहार मानी जाती है, जिसके छह खंडों में ग्रीष्म से आरंभ कर बसंत तक की छह ऋतुओं का सुंदर प्रकृति चित्रण प्रस्तुत किया गया है। ऋतुसंहार का कलाशिल्प महाकवि की अन्य कृतियों की तरह काफी ख्यातिप्राप्त है। वस्तुतः कालिदास प्रकृति के उपासक कवि थे। उनकी रचनायें प्रकृति का अद्भुत चित्र प्रस्तुत करती हैं।



'ऋतुसंहार' का शाब्दिक अर्थ है- ऋतुओं का समूह। यह एक खंड काव्य है। इस खण्डकाव्य में कालिदास ने अपनी प्रियतम को संबोधित कर छह ऋतुओं का छह खंडों में वर्णन किया है। प्रकृति का रमणीय चित्रण कालिदास के काव्य की वास्तविक आत्मा हैं। कालिदास ने ऋतु-चक्र का वर्णन ग्रीष्म ऋतु से आरंभ किया है। उसके बाद वर्षा ऋतु, शरद्, हेमन्त व शिशिर ऋतुओं का क्रमशः चित्रण करते हुए प्रकृति के सर्वव्यापी माधुर्य एवं वैभव से सम्पन्न ऋतुराज बसंत ऋतु के साथ इस कृति का समापन किया है।

द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं सपद्मं स्त्रियः सकामाः पवनः सुगन्धिः।

सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः सर्व प्रिये! चारुतरं बसन्तः॥

वापीजलानां मणिमेखलानां शशाङ्कभासां प्रमदाजनानाम्।

चूतद्रुमाणां कुसुमान्वितानां ददाति सौभाग्यमयं बसन्तः॥

हर ऋतु में प्रकृति-जगत में होनेवाले परिवर्तनों व प्रतिक्रियाओं के युवक-युवतियों व प्रेमी-प्रेमिकाओं के प्रणय-जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का रोमानी शैली में निरूपण किया है। प्रकृति के प्रांगण में विहार करनेवाले विभिन्न पशु-पक्षियों तथा नाना प्रकार के वृक्षों, लताओं व फूलों को भी कवि कालिदास ने अपनी काव्य रचना में समाहित किया है।

इनके काव्य में प्रेम के नैसर्गिक स्वरूप का वर्णन मिलता है। प्रकृति के साथ मन में उठने वाले संवेगों के वास्तविक स्वरूप का वर्णन इन्होंने किया है। प्रेम ही इनकी कविताओं का आधार है और शायद यही सृष्टि के चलने के लिए आवश्यक भी है।

— सुधांशु कुमार विश्वास

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
तनु चंद्रा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	सुधांशु कुमार विश्वास राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय कनिष्ठ अनुवादक	कैलाश चंद्र धारिया एवं दयामय दास

ऋतुराज बसंत

सभी ऋतुओं का राजा कहा जाता है बसंत को क्योंकि इसकी बात अन्य ऋतुओं की तुलना में निराली है। यह फरवरी मार्च और अप्रैल के मध्य अपना सौंदर्य बिखेरती है। ऐसा माना गया है कि माघ महीने की शुक्ल पंचमी से बसंत ऋतु का आरंभ होता है। फाल्गुन और चैत्र मास बसंत ऋतु के माने गए हैं। शक संवत के अनुसार फाल्गुन वर्ष का अंतिम मास है और चैत्र पहला। इस प्रकार हिंदू पंचांग के वर्ष का अंत और प्रारंभ बसंत में ही होता है। इस ऋतु के आने पर सर्दी कम हो जाती है, मौसम सुहावना हो जाता है, पेड़ों में नए पत्ते आने लगते हैं, आम के पेड़ बौरों से लद जाते हैं और खेत सरसों के फूलों से भरे पीले दिखाई देते हैं। यही कारण है कि राग रंग और उत्सव मनाने के लिए यह ऋतु सर्वश्रेष्ठ मानी गई है शायद यही कारण है कि इसे ऋतुराज कहा गया है।

बसन्त ऋतु वर्ष की एक ऐसी ऋतु है जिसमें वातावरण का तापमान प्रायः सुखद रहता है। भारत में यह फरवरी से मार्च तक होती है। अन्य देशों में यह अलग समयों पर हो सकती है। इस ऋतु की विशेषता है मौसम का अत्यधिक गरम और न अत्यधिक ठंडा होना, फूलों का खिलना, पौधों का हरा भरा होना और पहाड़ की चोटियों से हिम का पिघलना। पौराणिक कथाओं के अनुसार बसंत को कामदेव का पुत्र कहा गया है। कविवर देव ने बसंत ऋतु का वर्णन करते हुए कहा है कि रूप व सौंदर्य के देवता कामदेव के घर पुत्रोत्पत्ति का समाचार पाते ही प्रकृति झूम उठती है, पेड़ उसके लिए नव पल्लव का पालना डालते हैं, फूल वस्त्र पहनाते हैं, पवन झूला झुलाती है और कोयल उसे गीत सुनाकर बहलाती है। भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है ऋतुओं में मैं बसन्त हूँ।

बसन्त ऋतु में बसन्तपंचमी, शिवरात्रि तथा होली नामक पर्व मनाए जाते हैं। भारतीय संगीत, साहित्य और कला में इसे महत्वपूर्ण स्थान है। बसन्त ऋतु का स्वागत करने के लिए माघ महीने के पाँचवे दिन एक बड़ा जश्न मनाया जाता था जिसमें विष्णु और कामदेव की पूजा होती थी जो कालान्तर में बसन्त पंचमी का त्यौहार कहलाया। पुराणों के अनुसार श्रीकृष्ण ने सरस्वती से खुश होकर उन्हें वरदान दिया था कि बसन्त पंचमी के दिन तुम्हारी भी आराधना की जाएगी... और यूँ भारत के कई हिस्सों में बसंत पंचमी के दिन विद्या की देवी सरस्वती की भी पूजा होने लगी जो कि आज तक जारी है।

काव्यात्मक अभिव्यक्तियों के अति प्राचीन युगों से ही बसंत को सभी ने सराहा है। इस बसंत ने किसी को भी नहीं छोड़ा. कालिदास से लेकर निराला तक एवं टैगोर से लेकर अंग्रेज लेखक शैली तक। सब बसंत के दीवाने...! तभी तो कालिदास ने इसे बसंतयोद्धा कहा है - बसंतयोद्धा समुपागतः प्रिये... बसंत का यह 'योद्धा' हर्ष और नवोत्कर्ष लाता है। दैहिक उमंगों और प्रकृति के बीच एक अजीब सा साम्य बैठ जाता है। - ऋतुसंहार में कालिदास लिखते हैं- 'नेत्रे निमीलियति रोदिति याति शोकं... कांतावियोगपरिखेदितचित्तवृत्ति-द्रष्टाध्वगः कुसुमितानि सहकारबृक्षान...' कालिदास के काव्य में भी बसंत जिसे छू जाए, वही सुगंध से भर उठता है - क्या फूल, क्या लताएं, क्या हवा और क्या हृदय - सभी बसंत के प्रहार से विकल हो उठते हैं...

'द्रुमाः सपुष्पाः सलिलं स्पृशं
स्त्रियः सकामः पवनः सुगंधिः,
सुखाः प्रदोषा दिवसाश्च रम्याः
सर्वमम् प्रियम् चारुतरम् बसंत...'

'पवनः सुगंधिः' कालिदास के यहां विकलता का उत्सव है। वह चंचल भी कम नहीं। आम के पेड़ों को हिलाकर भाग जाती है..। यह 'बसंत हवा' चली ही आ रही है।

निराला बसंत के सौंदर्य की चर्चा करते हुए लिखते हैं-

'सखि, बसंत आया...

भरा हर्ष वन के मन,

नवोत्कर्ष छाया...'

आज के जन-कवि तक पहुंचते-पहुंचते भी न इसका रूप बदला है, न चंचलता। ऋतुराज बसंत ने अपने प्रभाव से सबों को अपनी ओर आकर्षित किया है। बसंत ने अपनी मादकता से बिना कोई भेदभाव किए जन मानस को बांधे फैलाकर अपने आगोश में समेटा है।

कालिदास के युग में नटखट और शैतान बच्चे की तरह वासंतिक हवा आम के बौर को हिलाकर धमाचौकड़ी मचाती थी और आज के आधुनिक काव्य युग में भी बसंत आम और महुआ के पेड़ों पर चढ़कर थपाथप शोर मचाती है।



ऋतुराज बसंत का बड़ा महत्व है। कड़कड़ाती ठंड के बाद प्रकृति की छटा देखते ही बनती है। पलाश के लाल फूल, आम के पेड़ों पर आए बौर, हरियाली और गुलाबी ठंड मौसम को सुहाना बना देती है। यह ऋतु सेहत की दृष्टि से भी बहुत अच्छी मानी जाती है। मनुष्यों के साथ पशु-पक्षियों में नई चेतना का संचार होता है।

बसंत को प्रेम के देवता कामदेव का मित्र माना जाता है। इस ऋतु को काम बाण के लिए अनुकूल माना जाता है और मन में काम की अधिकता समायी रहती है।

कवि केदारनाथ अग्रवाल ने लिखा है-

चढ़ी पेड़ महुआ थपाथप मचाया,

गिरी धम्म से फिर, चढ़ी आम ऊपर,

उसे भी झकोरा, किया कान में 'कू',

उतर के भगी मैं, हरे खेत पहुंची,

वहां गेहुओं में लहर खूब मारी, पहर दो पहर क्या,

अनेकों पहर तक, इसी में रही मैं..."बसंती हवा'

बसंत को हर वर्ष आना ही है और इसी लिए इसे ऋतुश्रेष्ठ कहा गया है और कवियों के काव्य रचना की यह एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। शैली ने अपनी कविता में बसंत के बारे में लिखा- लोग कहते ही रहेंगे, अपने-अपने युगों में, अलग-अलग वक्त, अलग-अलग हालात में, लेकिन बसंत अनंत काल तक... आम जन-मन को हर्षाता रहेगा।

— संजीव कुमार

विभिन्नता में एकता

जैसा कि हम सब जानते हैं भारत एक बहुत बड़ा विशाल देश है इस देश में बहुभाषी, बहुसंस्कृति एवं विभिन्न क्षेत्रों के लोग निवास करते हैं। हम सब भारत मां के लाडले बेटे हैं। हमारे देश में विभिन्न प्रकार के त्यौहार मनाए जाते हैं। हम सभी भारतवासी विभिन्न प्रकार के त्योहारों को मनाते हैं। जैसे होली दीपावली, ईद, एवं क्रिसमस। हम सभी भारतवासी भारत मां को बहुत प्यार करते हैं। हमारे देश में कभी दीपावली की पावन रोशनी की शोभा होती है, तो कभी होली के विभिन्न रंग हमारे जीवन में खुशियां भर देते हैं। इसी प्रकार ईद का त्यौहार हम सब भारत वासियों को एक दूसरे से गले मिलने का मौका देता है, इसी प्रकार जब हम क्रिसमस का त्योहार मनाते हैं तब सभी भारतवासियों के मन में एक प्रेम का उत्साह बढ़ जाता है। यह सब एक ही संदेश देते हैं — विभिन्नता में एकता।

मनुष्य कुछ समय के लिए ही इस संसार में आता है। यदि हम एक दूसरे से प्रेम नहीं करते हैं तो जीवन निरर्थक है इसलिए आज भारत वर्ष में सबसे बड़ी आवश्यकता है तो वह है प्रेम। सभी को सहिष्णुता के साथ जीवन जीने की। यदि जीवन में सहिष्णुता नहीं है तो जीवन सार्थक नहीं कहा जा सकता अर्थात् जीवन को सफल बनाने के लिए जीवन को सार्थक बनाने के लिए आपस में एक दूसरे से प्रेम करना अनिवार्य है। जब हम अपनी दृष्टि कश्मीर से कन्याकुमारी तक और पूर्व से पश्चिम तक डालते हैं तो देखते हैं कि हमारा बहुत बड़ा विशाल देश है। इस देश में सिर्फ ना सामाजिक सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विभिन्नता है बल्कि बौद्धिक विभिन्नता भी है। इसलिए हम सबको यह प्रयास करना चाहिए कि हमारे देश में अभी भी देश के कुछ ऐसे हिस्से हैं जहां पर ना तो ज्ञान का प्रकाश पहुंचा है और ना ही धन-संपत्ति। धन-संपत्ति का हिस्सा उन परिवारों तक पहुंचा है। अतः यदि हम भारत को एक खुशहाल देश देखना चाहते हैं तो हम को चाहिए कि भारत के प्रत्येक नागरिक का चेहरा भी मुस्कुराता हुआ होना चाहिए। सभी बच्चों को अच्छा पोषण आहार मिले, सभी बच्चों को अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त हो एवं सभी परिवार देश के समस्त त्यौहारों को उल्लास पूर्वक मनाएं तभी तो कहेंगे कि हम सचमुच में विभिन्नता में एकता की बात करने वाले भारतवासी हैं।

आज देश में बहुत सारे बच्चे, बहुत सारी बच्चियां विद्यालय का मुंह नहीं देख पाती है और ना ही उनको अच्छा पोषण आहार मिल पाता है अतः समाज के प्रत्येक जिम्मेदार नागरिक चाहे वह जिस किसी भी क्षेत्र में अपनी अहमियत रखता है उसका कर्तव्य बनता है कि जो वंचित, शोषित एवं पिछड़े हुए समाज के लोग हैं उनकी सहायता करें। क्योंकि हमारे धर्म ग्रंथों में भी हमको यही शिक्षा दी है कि हमने उस की सहायता करें। एक जो लाचार है उसके साथ खड़े रहें और कंधे से कंधा मिलाकर के भारत मां को सफलता के शिखर पर पहुंचाएं।

अतः मेरा ऐसा मानना है कि देश में जब तक सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन नहीं आएगा तब तक हमारा राजनीतिक परिवर्तन एवं अन्य सांस्कृतिक परिवर्तन यह सब अधूरे ही कहलाएंगे। आइए होली के पावन अवसर पर हम सब एक दूसरे को प्रेम का रंग लगाकर मन में बसे हुए द्वेष एवं घृणा को खत्म करें एवं आपस में सब से गले मिलकर अपने अपने कर्तव्य का पालन करें। हम सब जानते हैं कि भगवान राम ने भीलनी के झूठे बेर खाए थे क्योंकि उनमें ऊंच-नीच की कोई दुर्भावना नहीं थी। वह सब से प्रेम करते थे। इसी प्रकार ईसा मसीह दूसरों के हित के लिए खुद सूली पर चढ़ गए। वह भी चाहते थे कि मानव जाति में प्रेम बना रहे, दुश्मनी खत्म हो और आपस में दो लोग एक दूसरे से प्रेम करें। कोई भी दुनिया का धर्म ग्रंथ हमको यही शिक्षा देता है कि हम आपस में एक दूसरे से प्रेम करें और जहां कहीं भी हमें हमारे कर्तव्यों का इमानदारी से निर्वाह करें तभी भारत माता समृद्ध माता कहलाएगी। मेरा ऐसा मानना है।

— कैलाश चंद्र धारिया

महिला सशक्तिकरण

परिदृश्य बदल रहा है। महिलाओं की भागीदारी सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ रही है और महिला सशक्तिकरण हो रहा है। अपने क्षेत्र में कुछ खास उपलब्धियां हासिल करने वाली कुछ महिलाओं का उदाहरण देकर हम महिलाओं की उन्नति को दर्शाते हैं। अगर इतिहास पर ध्यान दिया जाए तो हम यह पाएंगे कि अपने क्षेत्र में कुछ अद्भुत करने वाली महिलाएं तो हर काल में रही हैं। सीता, द्रौपदी, रजिया सुल्तान, रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, इंदिरा गांधी, किरण बेदी, सानिया मिर्जा और रानी पद्मावती तक। परंतु महिलाओं की स्थिति में कितना परिवर्तन आया है इस पर चर्चा होनी चाहिए।

दरअसल परिवर्तन तो आना चाहिए। लोगों की सोच में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। जिनको महिलाओं की क्षमता का अंदाजा नहीं है उन्हें उनके प्रति अपनी नजरिया बदलना आवश्यक है तभी वास्तव में महिला सशक्तिकरण हो पाएगा। महिला के महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराध बढ़ रहे हैं। कुछ चुनिंदा घटनाएं एवं चुनिंदा लोगों की वजह से सारी अन्य महिलाओं एवं लड़कियों के बाहर निकलने वाले तमाम रास्ते बंद हो जा रहे हैं। आज आवश्यकता है उन बंद दरवाजों को खोलने की। आज आवश्यकता है रोशनी को अंदर आने देने की। आज आवश्यकता है आईने में अपना प्रतिबिंब देखने की। अगर यह वास्तव में फलीभूत हो पाया तभी महिला स्वतंत्र कहलाएगी।

बचपन से सिखाया जाता है कि महिलाओं को खाना बनाना जरूरी है जरूरत है कि सिखाया जाए कि खाना बनाने के साथ-साथ आर्थिक रूप से सक्षम होना भी जरूरी है। पैसे से खुशियां नहीं आती खुशियों के साथ साथ और भी अन्य खुशियां भी आती है जो उस महिला के जीवन को सशक्त करती है। अगर शिक्षा में कुछ अंक जोड़ा जाए तो किताबी ज्ञान के साथ साथ व्यवहारिक ज्ञान भी महिलाओं के लिए आवश्यक है। इसलिए महिलाओं को इस लायक बनाया जाए कि वे अपना खर्च तो वहन करें ही साथ ही विपरीत परिस्थितियों में अपने परिवार का भी भरण पोषण कर सकें।

यह जरूरी नहीं कि हर कमाने वाली लड़की डॉक्टर या टीचर है पर वह खाना बना सकती है, आफिस में काम कर सकती है, पार्लर चला सकती है, कपड़े सी सकती है, उन्हें यह सब आता है वह यह सब करती है। एक सोच की जरूरत है इस सोच को आगे बढ़ाने की उनकी कुशलता को उनकी जीवन रेखा बनाने की ताकि समय आने पर वह खुद का व्यवसाय कर सके और अपने पैरों पर खड़ा हो सके तथा अपने परिवार को चला सके। यह उन्हें स्वाभिमान देगा आत्मविश्वास देगा कि वह भी जीवन में एक खुशहाल भविष्य की कामना कर उसे पा सकती है।

ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति शहरी क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की तुलना में ज्यादा दयनीय है। यह सर्वविदित है कि महिलाएं पुरुषों के समान अधिकार से वंचित और विकास के लिए महत्वपूर्ण संसाधनों के उत्पादन में भी उनका योगदान एवं भागीदारी कम होने की वजह से हुए शक्तिहीन बने रहने को मजबूर हैं। इसीलिए यदि हमें महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना है तो महिलाओं को पुरुषों के साथ सक्रिय भागीदार बनना होगा।

किसी भी समाज में आधुनिकीकरण के प्रयासों को सफल बनाने के लिए महिलाओं को विकास की मुख्यधारा में शामिल होना जरूरी है। पर अब प्रभावी संचार कौशल के विकास के बिना महिलाएं अपनी आवाज बुलंद नहीं कर सकती हैं। महिला सशक्तिकरण के बिना परिवार के हर सदस्य का विकास आसानी से नहीं हो सकता है। एक महिला परिवार में सभी चीजों के लिए बेहद जिम्मेदार मानी जाती है अतः वह सभी समस्याओं का समाधान अच्छी तरीके से कर सकती है। महिलाओं के सशक्त होने से पूरा समाज अपने आप सशक्त हो जाएगा।

विश्व में कितने आदमी

अगर कोई पूछे विश्व में कितने आदमी हैं तो लोग विश्व की जनसंख्या बताएंगे। लेकिन मेरा प्रश्न दो पैर वाले आदमी की संख्या से नहीं है अर्थात् कितनों में मनुष्यता बची है, से है। मेरे हिसाब से पृथ्वी पर मुट्ठी भर आदमी रह गए हैं। बाकी तो मनुष्य अपने पूर्व जन्मों के कर्मानुसार मनुष्य योनि में जन्म भले लिया है परंतु सही अर्थ में क्या आदमी है? स्वाभाविक है, पाठक हमसे आदमी की परिभाषा जानना चाहेंगे। आदि काल में जब हम लोग जंगलों में रहते थे तो आदमखोर प्राणी थे।

आदमखोर मतलब आदमी को खाने वाले से नहीं बल्कि जीव-जंतु तथा हर प्राणी को खाने वाले से हैं। कुछ दिनों के पश्चात जंगली मानव कुछ सभ्य हुए तथा जंगली जीव जंतुओं को मारकर खाने के बजाए उसे पालना पोसना शुरू कर दिए और हम फल फूल खाने लगे। कृषि करना सीख गए, फिर हम लोग आदमखोर की जिंदगी छोड़कर सभ्य प्राणी की ओर चरण बढ़ाना शुरू किया। परंतु बहुत कम लोग इस दिशा में बढ़े अधिकांश जंगली मानवों ने अपने स्वभाव में परिवर्तन करना स्वीकार नहीं किया जो आज तक प्रचलित है।

जीव जंतुओं को मारकर खाना जिसने छोड़ दिया वे साधु संत कहलाए और उनका रहन सहन भिन्न हो गया। धीरे-धीरे साधु-संतों की संख्या काफी बढ़ी और जीव जंतुओं को मारकर खाने वालों को समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाने लगा तब भी लोग आदमी नहीं बन पाए और लुका छुपा कर मांस मदिरा खाने लगे। कई सौ वर्षों के उपरांत हमलोग फिर उसी रास्ते पर चलने लगे हैं जिसे एक ओर घोर कलयुग कहा जाता है तो दूसरी ओर सभ्य समाज। परंतु आप कितने सभ्य हुए हुए हैं इसकी जांच होनी चाहिए। लोग अपनी पीठ स्वयं थपथपा रहे हैं और सभ्य होने का ढिंढोरा पीट रहे हैं। जैसे किसी व्यक्ति के पैर से एक चींटी माथे तक जाती है और उसी प्रकार नीचे पैर तक आ जाती है। यही प्रकृति का नियम है मनुष्य पहले जंगलों में रहते थे जंगली जानवरों का मांस खाते थे और फिर सभ्य होते गए और आज हम फिर उसी जंगली अवस्था में जी रहे हैं भले आज फरटिदार अंग्रेजी बोलने वाले इसे स्वीकार नहीं करें लेकिन कुछ दिए गए सवालों का जवाब से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। मांस, मछली, अंडा, मदिरा का सेवन करने वाले आदमी नहीं है। इस बात से बहुत से लोग नाराज हो जाएंगे ऐसी आशंका है फिर भी जिस प्रकार गणित में सब कुछ मान लिया जाता है मान लिया $x=100$ उसी प्रकार कुछ समय के लिए के लिए मान लिया जाए इसमें कोई हर्ज नहीं।

पराई बेटी, पराई बीबी तथा पराये धन को हड़पने वाला क्या मनुष्य है? अपने पद का दुरुपयोग करने वाले अर्थात् अपने पद के कारण रिश्ततखोरी करना, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना तथा अपने से कमजोर को सताने वाला आदमी है? क्या चंद रुपयों के लिए तड़पते मरीज का इलाज नहीं करने वाला डाक्टर आदमी है? क्या आपने ही नौकरानी / छात्रा या अपनी ही बेटी से बलात्कार करने वाला आदमी है? कुछ रुपयों के लिए अधिकारी या परीक्षक पास को फेल कर देना तथा फेल को पास कर देने वाला आदमी है? चंद पैसों पर बिकने वाला वकील बाबू, जज बाबू, झूठी गवाही देने वाला आदमी है? अरबों खरबों का हेराफेरी करने वाला मंत्री संत्री क्या आदमी है? दूध घी में मिलावट करने वाला व्यापारी, नकली दवा, बनाने वाला और बेचने वाला क्या आदमी है? अस्पताल में बच्चों का हेराफेरी करने वाला या मानव अंगों की तस्करी करने वाला या भ्रूण हत्या करने वाला डॉक्टर, नर्स या संस्था के लोग आदमी है? नौकरी लगा देने का झांसा देकर या विवाह कर लेने का झांसा देकर भोली भाली लड़की से बलात्कार करने वाला क्या आदमी है? जमीन के चंद टुकड़ों के लिए अपने ही सगे संबंधी भाई बंधुओं का हत्या करने वाला क्या आदमी है? स्वयं टैक्स न चुकाने वाला मंत्री

संतरी कर्मचारियों तथा देशवासियों पर नाना प्रकार के टैक्स देने के लिए मजबूर करने वाले आदमी है ? उन्हें तो सबसे पहले स्वयं टैक्स चुकाकर समाज में उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए । 5 या 10 वर्षों तक मंत्री संतरी के पद पर रहने वाले अरबों-खरबों जमा करने वाला क्या आदमी है? चंद रुपयों के लालच में अपने ही देश की खुफिया जानकारी दुश्मन देशों को देने वाला क्या आदमी है? दिन के उजाले में अच्छे अच्छे उपदेश देने वाले ढोंगी, बाबा मौलवी, संत रात में महिलाओं को बलात्कार करने वाला क्या आदमी है ? आज कितने ढोंगी बाबा हवालात में बंद है । पूजा पाठ के नाम पर जबरदस्ती चंदा वसूल कर शराब और कबाब खाने पीने वाला संस्था/पूजा मंडली के लोग आदमी है? जिंदा मुर्गा, बकरा, बकरी, गाय, भैंस, हिरण, सूअर भेड़िया, जानवरों को बेरहमी से कत्ल कर उसे पकाकर खाने वाला आदमी है ? हम ऋषि मुनियों के वंशज हैं क्या हमारे ऋषि-मुनि खाते थे? तब हम क्यों खा रहे हैं कारण है आपको 84 लाख योनियों में जन्म लेने का फल भोगना होगा इसलिए आप इसे सहज नहीं मान सकते ।



किसी के बने काम को बिगाड़ने वाला अर्थात् चुगली करने वाला किसी की शादी ब्याह जैसे पवित्र कार्य को तोड़वाने वाला आदमी है? मंदिर, मस्जिद, गिरजा, तालाब, शमशान, भूमि धर्मशाला, स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, खेल के मैदान जैसे सार्वजनिक स्थल को अपने नाम रजिस्ट्री करवाने वाला आदमी है ? किसी सुंदरी वाला को देख मन ही मन उसे अपना लेने के लिए एक तरफा प्यार करना तथा नहीं मिलने पर उसे कत्ल कर देने वाला क्या आदमी है? उपर्युक्त मानदंडों पर कोई भी सौ फीसदी आदमी नहीं हो सकता । इसमें कुछ ग्रेस मार्क देने पर भले आदमी के श्रेणी में आ सकते हैं ।

पाठक निश्चय ही ऐसे व्यक्ति के लक्षण जानना चाहेंगे जो आदमी की श्रेणी में आ सकते हैं । जो निम्न प्रकार है - जिसका इस धरा पर कोई भी शत्रु नहीं हो वह आदमी की श्रेणी में है । जो लोग क्रोध, लोभ घृणा इर्ष्या जैसे पाप वृत्तियों पर काबू पा लिया हो वह आदमी की श्रेणी में है । जिसे हर प्राणी में ईश्वर का वास नजर आता है वो आदमी की श्रेणी में है । ऐसे व्यक्ति जो मानव सेवा हेतु स्कूल कॉलेज, अस्पताल बनाने हेतु भूमि दान करता हो ऐसे पुरुष आदमी है । जो व्यक्ति अपने और पराए में कोई फर्क नहीं करता हो वह आदमी है । जो व्यक्ति दूसरों के दुख में दुखी और दूसरों के सुख में सुखी होता है वह आदमी है । जो ईमानदारी पूर्वक धन अर्जन करता हो तथा अपने आवश्यकता भर रखकर शेष धन को दीन दुखियों के बीच बांट देता हो ऐसे पुरुष आदमी है । जिसे परम संतोष हो, सपने में भी लोभ न आये ऐसे व्यक्ति आदमी है । जो व्यक्ति धर्णशास्त्रों के अनुसार जीवन जीता हो, अपना समय ईश्वर भक्ति तथा समाज सेवा में लगाता हो और प्रतिदिन अपने किए पाप पुण्य का हिसाब रखकर किए गलती के लिए परमपिता से माफी मांग कर पुनः गलती नहीं करने का शपथ खाता हो तथा इसका निर्वाह आजीवन करता हो ऐसे व्यक्ति आदमी है ।

सबसे पतन डॉक्टर, मास्टर, पुलिस, वकील, नेता, मंत्री तथा अधिकारी का हुआ है। जो रक्षक है वही भक्षक बने हुए हैं । किस से उम्मीद की जाए, बलात्कार भी तीन-चार की साल की अबोध बच्ची से लेकर 70- 80 साल की वृद्धा के साथ । क्या आप इसे मनुष्यता कहेंगे? आज बच्ची या स्त्री कहीं भी सुरक्षित नहीं है, स्कूल हो या कॉलेज अस्पताल या घर हर जगह पर इसका बलात्कार हो रहा है। इस पर अंकुश कैसे लगे । यह विचारणीय प्रश्न है हर देशवासी के लिए । मानव की विकृत सोच को बदल कर ही इसे रोक पाना संभव है ।

-- सच्चिदानंद जिज्ञासु

व्यक्तित्व और रंग

सृष्टि के कण-कण में रंगों का अद्भुत संसार बिखरा पड़ा है जो मनुष्य जीवन में रंग भरकर उसे सरस एवं जीवंत बनाए हुए हैं। प्रकृति के ये रंग ही जिन्दगी में सतरंगी छटा-सा सृजन करते हैं। रंगों के अभाव में जीवन की कल्पना करने पर घोर अंधकार के सिवा और कुछ नहीं बचता। इस रंगों के रंगीन संसार की अपनी भाषा व अपना विज्ञान है जिसे काल खण्ड में मानव ने नजदीक से परखने की कोशिश की है।

रंगों का प्रकाश से अभिन्न सम्बन्ध है। इसमें भी सूर्य प्रकाश का प्राकृतिक एवं विशुद्ध क्षेत्र है। सात रंग की सात किरणों का सृजेता होने की वजह से सूर्य को सप्तरश्मि भी कहा गया है। प्रकाश सात रंगों से मिलकर बनता है जिन्हें हम प्रिज्म के माध्यम से देख सकते हैं। प्रकाश की किरणों में क्रमशः बैंगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल रंग प्रकट होते हैं। सत्य तो यह है कि किसी वस्तु का वास्तव में अपना कोई विशिष्ट रंग नहीं होता है। उसका रंग क्या होगा? यह उस पर पड़ने वाले प्रकाश के परावर्तन पर निर्भर करता है। जब किसी वस्तु पर प्रकाश की किरणें पड़ती हैं तो वे उक्त वस्तु से परावर्तित होकर हमारी आँखों से टकराती है और हमें वह वस्तु दिखाई देती है। अब वस्तु का रंग इस बात पर निर्भर करता है कि वह प्रकाश में विद्यमान सात रंगों में से किस को अवशोषित करती है और किसको परावर्तित। जब

वस्तु सभी रंगों को अवशोषित करती है तो वह काली दिखाई देती है। जब वह सभी रंगों को परावर्तित करे तो वह सफेद दिखाई देती है। जब वह किसी एक रंग को परावर्तित कर तो वैसे रंग की दिखाई पड़ती है।



इनमें से प्रत्येक रंग की अपनी अलग-अलग भाषा है। वे किसी विशेष गुणधर्म को प्रकट करते हैं व सभी की अपनी-अपनी शक्ति होती है। ये रंग इनको पसन्द करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व को भी प्रभावित करते हैं।

सफेद रंग शांत स्वभाव, सादगी, विचारों की उच्चता, तेजस्विता और सात्विकता का प्रतीक है। इस रंग के प्रति लगाव वाले व्यक्तियों में जटिलता नहीं पायी जाती है। वे शान्त, सात्विक और स्पष्टवादी प्रवृत्ति के होते हैं। आदर्शवादी होते हैं। कभी उत्तेजित नहीं होते और लड़ाई-झगड़े से बचकर रहना चाहते हैं।

धूसर, मटमैला रंग, गम्भीरता, विनम्रता, सौजन्यता और लज्जा के साथ - साथ कर्मठ - क्रियाशीलता का प्रतीक है। किन्तु बाह्य उत्प्रेरक न मिले तो यह निर्बल रंग है। भूरा रंग एकता की भावना, ईमानदारी, अच्छाई, भलाई और उच्च भावना के साथ सहयोग का भाव जगाता है। इस रंग को पसन्द करने वाले व्यक्ति अपने मित्रों, परिवारजनों व कार्य के प्रति पूरी तरह से समर्पित होते हैं। यह रंग स्थिरता और अच्छे व्यवहार का संकेत देता है।

लाल रंग उग्रता का प्रतीक है। लाल रंग को शुभ भी माना गया है। लाल रंग के प्रति लगाव रखने वाले व्यक्ति उग्र, महत्वाकांक्षी व उत्साही होते हैं। साथ ही इनमें शीघ्र उत्तेजित होने व झगड़ालू प्रवृत्ति की भी सम्भावना बनी रहती है। वे दृढ़ता के साथ कार्य करने में विश्वास रखने वाले होते हैं। वे जो सोचते हैं व जो काम हाथ में लेते हैं, उसे पूरा करके ही दम लेते हैं। लाल रंग के कपड़े जीवन्तता व चुस्ती का अहसास देते हैं। सर्दी लगने पर लाल रंग के दस्ताने, जुराब व स्कार्फ गर्मी का अहसास दिलाते हैं। यदि गर्मी अधिक हो या फिर क्रोध आता हो तो इस रंग से बचना चाहिए।

यह उग्र विचार, उग्र प्रेम एवं तीव्र भावुकता को व्यक्त करता है। यह रंग शौर्य, वीरता, संघर्ष एवं उत्साह को भी प्रकट करता है। प्राचीनकाल में सैन्य झण्डे और वस्त्र लाल रंग के होते थे। क्रान्तिकारी उग्र आन्दोलनों में भी लाल रंग के प्रतीक झण्डों का उपयोग अधिक हुआ करता है। इसी तरह तीव्र भावुकता व्यक्त करने के उद्देश्य से शादी-विवाह में दुल्हन को लाल रंग के वस्त्र पहनाए जाते हैं।

पीला रंग ज्ञान, आध्यात्मिकता व कुलीनता आदि को व्यक्त करता है। इस रंग को भी शुभ माना गया है। पर्व-त्योहार धार्मिक अनुष्ठान आदि में इसका उपयोग विशेष रूप से किया जाता है। किन्तु यदि पीला रंग साफ एवं स्वच्छ न होकर मैलापन लिये हो तो हृदय के उत्साह को मार देता है। पलायनवाद, कायरता व दुर्बुद्धि को भी जगाता है। पीले रंग के प्रति लगाव रखने वाले व्यक्ति की बुद्धि व स्मरणशक्ति तीव्र होती है। वे कड़ी मेहनत में विश्वास रखते हैं, साथ ही हँसमुख व मिलनसार होते हैं, परिस्थितियों से घबराने नहीं। प्रत्येक स्थिति के अनुसार ढलने की उनमें अद्भुत क्षमता होती है। ऐसे व्यक्ति जीवन के हर क्षेत्र में आशावादी होते हैं।



नारंगी रंग को जीवनशक्ति, ऊर्जा, त्याग और बलिदान का प्रतीक माना गया है। यह वास्तव में लाल और पीले रंग के संयुक्त प्रभाव को प्रकट करने वाला है। इसीलिए इसे प्रफुल्लता, ताजगी, शक्ति, ऊर्जा और उत्साह का प्रतीक माना गया है।

नारंगी रंग को पसन्द करने वाला व्यक्ति खुले दिमाग तथा तीक्ष्ण बुद्धि का स्वामी होता है। प्रत्येक कार्य पूरे मनोयोग से करता है। प्रायः आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी होता है। प्रायः लेखकों, कवियों तथा कल्पनाशीलों व विचारवानों को यह रंग पसन्द होता है। ऐसे व्यक्ति ज्यादातर स्वप्नद्रष्टा व जीवन के प्रति आशावान् होते हैं।

हरा रंग को दो विचारों वाला रंग कहा गया है। हल्का हरा रंग बौद्धिक क्षमताओं को सक्रिय कर शान्ति देता है, जबकि हरा रंग यदि मैलापन लिए हो तो मन के विचारों को दूषित कर देता है। गहरे हरे रंग को शक, ईर्ष्या, द्वेष आदि से जोड़ा जाता है। विक्षोभ, थकान, ताजगी, चंचलता, स्फूर्ति व आराम दोनों का अद्भुत संगम इस रंग में देखा जाता है। यह रंग वातावरण को शान्त बनाने में सहायक होता है। जो लोग हरा रंग पसन्द करते हैं वे प्रकृति - प्रेमी होते हैं। वे प्रकृति के सान्निध्य में शान्ति व सुरक्षा की अनुभूति करते हैं।

नीला रंग आध्यात्मिक रंग है। यह शान्ति, सहिष्णुता, शुद्धता, सात्विक स्नेह और वैराग्य का प्रतीक है। यह गहराई, विशालता और अनवरत शान्ति को दर्शाता है। आसमान, सागर एवं शान्त झील के सान्निध्य में इस रंग की छटा निखर उठती है। इसको पसन्द करने वाले स्थिरचित्त और शान्तिप्रिय होते हैं, जीवन के किसी भी पहलू के प्रति गम्भीर दृष्टि रखते हैं, और किसी भी समस्या को शान्तिपूर्ण सुलझा लेते हैं। इनकी बुद्धि तीक्ष्ण व हृदय कोमल होता है। अपने हितों में ये समर्पित व ईमानदार होते हैं।

गहरा नीला रंग, हल्के नीले रंग के विपरीत प्रवृत्तियों को इंगित करता है। इस रंग के चित्ते को लगता है कि वह पूरे संसार में अकेला है। परिणामतः वह अपने में मग्न रहता है। उसे एकान्तवास प्रिय होता है। प्रायः उसमें आत्मविश्वास की कमी रहती है। बाहरी दुनिया, बाह्याडम्बरो एवं बनावटीपन से उसे घृणा होती है।

बैंगनी रंग रहस्यात्मक आचरण वालों को बेहद प्रिय होता है। इनके व्यवहार एवं स्वभाव में एक विचित्र-सी रहस्यात्मकता जुड़ी होती है। इन्हें शीघ्र पहचानना बड़ा कठिन होता है।

काले रंग को भारतीय परम्परा में अशुभ रंग माना गया है। धार्मिक अनुष्ठानों में इसका प्रयोग वर्जित है। यह रंग शोक दुःख जैसे भाव जगाने वाला है। यह विस्तार व विकास के विपरीत है तथा संकीर्ण मनोवृत्ति का द्योतक है। यह रंग व्यक्ति को स्वार्थी, आत्मकेन्द्रित, पलायनवादी व अन्तर्मुखी बनाता है। साथ ही निराशा व पतन को दर्शाता है। यदि इसे अन्य अच्छे और स्वच्छ रंगों से मिला दिया जाए तो यह बेहद व्यवहारकुशल रूप अपना लेता है। इसे पसन्द करने वाले व्यक्ति दृढ़ निश्चयी होते हैं। साथ ही ये भावनारहित व निरंकुश होते हैं।

गुलाबी रंग सौम्य, सरल स्वभाव का द्योतक है। आयु अधिक होने पर भी ये बचपन को दर्शाता है। परिणाम स्वरूप इस रंग को पसंद करने वालों की हरकतें, आचार-विचार बच्चों जैसे होते हैं।



ऐसे मनाना होली का त्योहार
पिचकारी से बरसे सिर्फ प्यार



फिरोजी रंग भावनात्मक रूप से स्थिरता प्रदान करने में सहायक है।

व्यक्ति की मनःस्थिति पर रंगों के सीधे एवं गहरे प्रभाव का आज विभिन्न देशों में मनोचिकित्सक द्वारा अध्ययन किया जा रहा है। कुछ का मानना है कि नारंगी एवं हल्का पीला रंग व्यक्ति में नई आशा का संचार करते हैं तथा व्यक्ति के चिन्तन को अधिक स्पष्ट करते हैं। विभिन्न शोधों से पता चला है कि कई व्यक्ति केवल इसीलिए अधिक गलतियां करते हैं क्योंकि वे काले रंग का प्रयोग अधिक करते हैं। जो लोग काला रंग अधिक पसन्द करते हैं, वे अधिकतर किसी होते काम को रोकने वाले, दुःखी तथा दूसरों से अलग-थलग रहने वाले होते हैं। मिलनसार व्यक्ति अपने कमरों को चटकीले रंगों से सजाते हैं व चमकीले रंग के वस्त्र पहनते हैं। जबकि शान्त एवं अन्तर्मुखी लोग भूरा, मटमैला या सफेद रंग पसन्द करते हैं।

रंगों के गुण-धर्म व शरीर मनोभावों पर पड़ने वाले प्रभाव के अनुरूप आवश्यक सावधानी बरत कर हम इनका अधिक लाभ ले सकते हैं। जब कोई व्यक्ति आलस और सुस्ती महसूस कर रहा हो या बेहद निराश व हताश हो तो रंगों का अब्दुत प्रभाव आजमा कर स्वयं में स्फूर्ति व नव उत्साह का संचार कर सकता है। शयनकक्ष में नीले या फिरोजी जैसे शीतल रंगों का प्रयोग अधिक उपयुक्त रहता है। क्योंकि हाल रंग अनिद्रा को प्रोत्साहित करता है। इस तरह हम अपने स्वभाव, रुचि एवं आवश्यकता के अनुरूप रंगों का चयन कर स्वयं के जीवन में रंग भर सकते हैं व उसे अधिक सुखी व स्वस्थ बना सकते हैं।

— श्वेता दूबे

नारी का सम्मान

नारी का सम्मान सदा होना चाहिए। संस्कृत में कहा गया है- 'यस्य पूज्यते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः' किंतु आज हम देखते हैं कि नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है। उसे 'भोग की वस्तु' समझकर आदमी अपने तरीके से इस्तेमाल कर रहा है। नारी का सबसे पवित्र रूप मां के रूप में देखने में आता है। मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है, क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है। किंतु बदलते समय के हिसाब से संतानों ने अपनी मां को महत्व देना कम कर दिया है। सब धन-लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं। मेरी बीवी व मेरे बच्चे यही आजकल परिवार की परिभाषा रह गई है।

औरत के लिए हमारी भाषिक परंपरा में सर्वाधिक प्रचलित तीन शब्द हैं- स्त्री, नारी और महिला। इनमें भी हमारी बोलचाल में 'स्त्री' और 'महिला' शब्द सबसे ज्यादा इस्तेमाल होते हैं। संस्कृत में तो ये तीनों शब्द व्युत्पन्न हैं, पर हिंदी में 'नारी' यौगिक शब्द (नर+ई) है। लज्जा से अभिभूत होने से औरत का एक पर्याय स्त्री है पतंजलि ने कहा है- स्तन-केश वाली स्त्री होती है और रोम वाला होता है पुरुष। वाराहमिहिर ने अपने ग्रंथ में लिखा कि ब्रह्मा ने स्त्री के सिवा ऐसा कोई रत्न नहीं बनाया, जो दिखाई देने, सुनाई देने, स्पर्श होने या स्मरण में भी आने पर सुखदायी हो-

महिलाओं का जागृत होना जरूरी है। एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है तो परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है। भारत में, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरूरी है जैसे दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, वैश्यावृत्ति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है जो देश को पीछे की ओर ढकेलता है।

यह जरूरी है कि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से मजबूत हो। चूंकि एक बेहतर शिक्षा की शुरुआत बचपन से घर पर हो सकती है, महिलाओं के उत्थान के लिये एक स्वस्थ परिवार की जरूरत है जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिये पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा और वहाँ की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिये लड़कियों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की जरूरत है।

पुरुष और महिला को बराबरी पर लाने के लिये महिला सशक्तिकरण में तेजी लाने की जरूरत है। सभी क्षेत्रों में महिलाओं का उत्थान राष्ट्र की प्राथमिकता में शामिल होना चाहिये। महिला और पुरुष के बीच की असमानता कई समस्याओं को जन्म देती है। ये महिलाओं का जन्मसिद्ध अधिकार है कि उन्हें समाज में पुरुषों के बराबर महत्व मिले। वास्तव में सशक्तिकरण को लाने के लिये महिलाओं को अपने अधिकारों से अवगत होना चाहिये। न केवल घरेलू और पारिवारिक जिम्मेदारियों बल्कि महिलाओं को हर क्षेत्रों में सक्रिय और सकारात्मक भूमिका निभानी चाहिये।

पिछले कुछ वर्षों में हमें महिला सशक्तिकरण का फायदा मिल रहा है। महिलाएँ अपने स्वास्थ्य, शिक्षा, नौकरी, तथा परिवार, देश और समाज के प्रति जिम्मेदारी को लेकर ज्यादा सचेत रहती हैं। वो हर क्षेत्र में प्रमुखता से भाग लेती हैं और अपनी रुचि प्रदर्शित करती हैं। अंततः कई वर्षों के संघर्ष के बाद सही राह पर चलने के लिये उन्हें उनका अधिकार मिल रहा है।

— रीतेश कुमार सिंह

मुखिया

एक राजा था। वह जब से राजगद्दी पर बैठा था, प्रजा के हर सुख दुख का ख्याल रखा करता था। प्रजा भी उसके इस आचरण से प्रसन्न रहा करती थी। राज्य में चारों तरफ सुख-समृद्धि का बोलबाला था। राजा का आचरण प्रजा के लिए सर्वथा अनुकरणीय तथा सुखदायक था।

एक दिन वह राजा सुबह-सुबह उठ कर वन की तरफ अकेला ही शिकार करने चल पड़ा। वह काफी दूर से चला आ रहा था, इसलिए कुछ कुछ थक गया था। रास्ते में उसे एक तालाब दिखाई दिया। उसने सोचा कि इसका जल पीकर प्यास बुझानी चाहिए तथा यहां रुक कर थोड़ा विश्राम करने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिए।

वह घोड़े से उतर कर तालाब के किनारे की तरफ बढ़ने लगा। उस तालाब में दो राजहंस तैर रहे थे। वे इतने सुंदर थे कि राजा उन पर मोहित हो गया। वह उन दोनों को पकड़ कर अपने राजभवन के तालाब में रखने की बात सोचने लगा। राजा उन की मनभावन छटा को देखकर इतना मुग्ध हो गया कि वह बिना एक पल की देर किए तालाब में उतर पड़ने को व्याकुल हो गया।

वह अपने कपड़े उतार कर उस तालाब में उन्हें पकड़ने के लिए कूद पड़ा। राजा हालांकि एक बहुत कुशल तैराक था, पर वह उन राजहंसों को पकड़ पाने में अपने को असफल पा रहा था। राजा एक तरफ से उन हंसों का पीछा करता तो वे दूसरी तरफ निकल जाते। जब वह उधर जाता तो वे तीसरी तरफ निकल जाते थे। राजा इस तरह तैरते हुए जब पूरी तरह थक गया तो पानी से निकल कर बाहर आ गया।

उन राजहंसों में से एक ने राजा की परेशानी देखकर कहा-“हे राजन! हम यक्षलोक के राजहंस हैं तथा हम आपके महल के सरोवर में केवल तभी रह सकते हैं जब वह सोने की ईंटों से बना हो तथा जगह-जगह मोती और माणिक्य सजे हों।” राजा वहां से लौट आया और राजहंसों के कहे मुताबिक अपने यहां वैसा ही सरोवर बनाने का आदेश दे दिया। सरोवर के निर्माण का कार्य शुरू हो गया। काफी मजदूर लगा दिए गए।

सरोवर का घेरा काफी बड़ा खुदवा दिया गया था। इसलिए उसकी दीवारों को बनाने में काफी सोने की आवश्यकता थी। पूरे राज्य में जितना सोना था, वह सब लगा दिया गया। फिर भी सरोवर के एक तरफ की दीवार सोने की नहीं बनाई जा सकी। इसके लिए किसी दूसरे राज्य से सोना खरीदना था। पर उसके लिए राजा के पास राजकोष में धन की कमी हो गई।

राजा ने जनता के ऊपर कई तरह के कर लगा दिए। जनता रोज के नए-नए करों की वजह से त्राहि-त्राहि कर उठी। पर वह राजा के सामने असहाय हो जाती थी। प्रजा का दुख देख कर सहृदय मंत्री का दिल रो उठा, पर उसकी सुनने वाला कौन था। प्रजा पर होने वाले कष्टों को देख कर स्वर्ग के देवता इन्द्र ने नाराज होकर मेघों का बरसना रोक दिए।

चारों तरफ हाहाकार मच गया। अकाल पड़ जाने से राज्य की जनता अपना-अपना घर छोड़ कर दूसरे राज्यों की तरफ भागने लगी। राजा को अब चेत हुआ कि ऐसे अकाल में उसका राज्य ही नष्ट हो जाएगा। उसने उसे बचाने के लिए कुलगुरु को बुलाया। कुलगुरु ने बताया-“राजन! मात्र दो हंसों के लिए पूरी जनता को कष्ट में डाल देने से इंद्र कुपित हो गए हैं! यही कारण है कि पूरे राज्य में अकाल पड़ गया है। यदि घर का मुखिया, देश का राजा ही स्वार्थ के लिए अपने मातहतों को कष्ट देने लगे तो उसका घर और उसका राज्य शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।”

राजा को तत्काल अपनी गलती का पता चल गया। उसने शीघ्र ही सरोवर बनाने का काम रोक दिया। प्रजा पर जितने तरह के कर लगाए गए थे, सब उठा लेने के लिए आदेश जारी कर दिया। वह पुनः पहले की भांति प्रजा के पालन के उत्तरदायित्व का सफल निर्वाह करने लगा। कुलगुरु ने ठीक ही कहा है कि जिस घर का मुखिया ही स्वार्थी हो जाए, उस घर का पतन निश्चित है। यह बात सिर्फ किसी एक घर या राज्य के लिए ही सही नहीं है वरन हर जगह इसकी सच्चाई काम आने वाली है। यह याद रखने वाली बात है कि यदि किसी घर का मुखिया बनना है तो अपने आश्रितों का ख्याल परम आवश्यक है।

— मैनेजर साह

राजभाषा समारोह: एक सिंहावलोकन

मालदा मंडल के राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 16/02/ 2018 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह व कवि सम्मेलन का आयोजन स्थानीय कालिंद्री भवन में किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि मंडल रेल प्रबंधक तनु चंद्रा महोदया ने दीप प्रज्वलित कर किया।

इस अवसर पर मंडल की मासिक पत्रिका बढ़ते कदम के नवीनतम अंक का विमोचन मंडल रेल प्रबंधक के द्वारा किया गया।



राजभाषा विभाग के वरिष्ठ अनुवादक

श्री विनोद कुमार त्रिपाठी ने मालदा मंडल द्वारा राजभाषा में किए गए कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। श्री त्रिपाठी ने बताया कि मंडल रेल प्रबंधक के नेतृत्व में पूरे मालदा मंडल ने राजभाषा के क्षेत्र में सराहनीय प्रगति की है। मंडल के विभिन्न स्टेशनों व कार्यालयों में नियमित रूप से कार्यशालाओं के आयोजन से कर्मचारियों में हिंदी में काम करने की समस्याएं दूर करने में काफी मदद मिल रही है तथा वे अपना कार्य मूल रूप से हिन्दी में ही संपन्न करने की दिशा में उन्मुख हो रहे हैं। मालदा मंडल द्वारा डिस्कवरी बाद ट्रेन पुस्तिका के प्रकाशन की चर्चा करते हुए श्री त्रिपाठी ने बताया कि इस पुस्तिका में मालदा मंडल के सभी पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण सभी दर्शनीय स्थलों से संबंधित जानकारी के साथ साथ आने जाने के लिए रेलवे संबंधित जानकारी को भी समाहित किया गया है जिससे इस मंडल में आने वाले पर्यटकों को काफी सहूलियत होगी।

इस आयोजन में मंडल के अधिकांश अधिकारी व कर्मचारी शामिल हुए। कार्यक्रम का आरंभ सरस्वती वंदना से हुआ। मालदा मंडल के रेल परिवार से जुड़ी उदीयमान नृत्यांगना जोइता कर्मकार ने सरस्वती वंदना के साथ नृत्य प्रस्तुत कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।



मंडल रेल प्रबंधक ने अपने संबोधन में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने की सलाह दी तथा अपने साथ काम करने वालों को भी हिन्दी में काम करने लिए प्रोत्साहित करने को कहा।

अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मुराधि श्री विजय कुमार साहू ने राजभाषा विभाग द्वारा किए जा रहे कार्यों को सराहा और अधिक से अधिक कर्मचारियों को इस से जोड़ने की बात कही। साथ ही उन्होंने सीधी- सरल हिंदी के प्रयोग पर बल दिया।

राजभाषा की नोडल कर्मचारी श्रीमती सुशीला मोदी ने गुलाब का फूल देकर आगंतुक कवियों सम्मानित किया। इसके बाद श्री भगवती पाण्डेय ने मंच सम्हालते हुए कवि सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ किया। कवि सम्मेलन में कवियों ने देशभक्ति, भ्रष्टाचार, प्रेम विरह और हास्य व्यंग की एक से एक बढ़कर एक कविताएं प्रस्तुत की।

मालदा मंडल के बिजली विभाग में कार्यरत विनय कुमार झा ने अपनी कविता होरी का पाठ कर श्रोताओं को फागुन के रंग में रंग दिया। पूर्व मुख्य टिकट निरीक्षक श्री



विजय कुमार ने बसंत के आगमन पर सुंदर कविता सुनाकर माहौल खुशनुमा बना दिया। मुख्य नियंत्रक श्री अरुण कुमार झा ने भ्रष्टाचार पर अपनी कविता के द्वारा वर्तमान व्यवस्था पर करारा चोट किया।

गनगनिया से पधारे कवि श्री एस के प्रोग्रामर ने अपनी कविता की प्रस्तुति से श्रोताओं में वीर रस का संचार कर दिया। सुल्तानगंज से आए कवि साथी सुरेश सूर्य ने अपनी ओजपूर्ण कविता के द्वारा वीर सपूतों को याद किया। मालदा के उदयमान कवि श्री शैलेंद्र राम ने सरकारी तंत्र पर चोट करते हुए अपनी कविता साहब की मिठाई का पाठ किया। लोको पायलट श्री उमेश कुमार मोदी ने होली के अवसर पर ट्रेनों को निशाना बनाए जाने को आधार बनाकर अपनी कविता कचरा मत उछाल का सस्वर पाठ किया। श्री सत्येंद्र तिवारी जी ने अपनी भावप्रवण कविताओं का पाठ कर लोगों में अद्भुत संवेदना का संचार कर दिया।

कवि सम्मेलन के पश्चात पुरस्कार वितरण की शुरुआत सामूहिक नगद पुरस्कार प्रदान कर की गई। क क्षेत्र से मुंगेर स्टेशन एवं सीनियर सेक्शन इंजीनियर बिजली कार्यालय साहिबगंज। एवं ग क्षेत्र से मालदा टाउन स्टेशन को हिंदी में अधिकाधिक कार्य संपन्न करने के लिए गोपाल सिंह नेपाली स्मृति राजभाषा पुरस्कार के रूप में 1500 रु. नकद एवं एवं ट्रॉफी के साथ प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। राजभाषा सप्ताह के दौरान वर्ष 2017 में राजभाषा विभाग मालदा के द्वारा कुल 9 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था इन प्रतियोगिताओं में सफल कुल 54 प्रतिभागियों को मंडल रेल प्रबंधक मालदा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

14 सितंबर 2017 को हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी में सफल विभागों को भी नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। मंडल के वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक कार्यालय को राजभाषा प्रदर्शनी का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी प्रदर्शनी का द्वितीय पुरस्कार बिजली विभाग मालदा एवं तृतीय पुरस्कार लेखा विभाग मालदा को दिया गया।

हिंदी में प्रशंसनीय कार्यालय कार्य संपन्न करने के लिए मंडल के 5 अधिकारियों और 61 कर्मचारियों को व्यक्तिगत नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। हिंदी के सभी नोडल कर्मचारियों को भी पुरस्कृत किया गया। इस प्रकार राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह में कुल 120 अधिकारी कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया। मंडल रेल प्रबंधक द्वारा आगंतुक कवियों को शाल प्रदान कर एवं नकद राशि देकर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का समापन राजभाषा अधिकारी (प्र) श्री सुधांशु कुमार विश्वास के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुआ।

प्रस्तुति— इंद्र ज्योति राय

चलो आज मनाएं होली

रंग ढूँढो दुनिया में
मिल जाएंगे अनेक
लेकिन जिसमें मिलते सारे
उस मिट्टी का रंग है एक

रंग बिरंगे पक्षियों की
आओ देखो ऊंची उड़ान
केवल है नीला एक
उनका आसमान

वस्त्र यहां पर तरह-तरह के
अलग है सबका रंग यहां
एक ही तो होता है
दुनिया में प्यारा प्यार का रंग

रंग बताता वर्दी का
सैनिक रहता है कहां
रंग खून का लाल है
जो युद्ध में जा बहता

दुनिया के सारे रंगों को
साथ मिलाती है होली
मेल कराती, बैर भुलाती
साथ सबों को लाती होली

चलो आज मनाएं होली,
दुखों को हर लेती होली
सबके लिए खुशियाली लाती।
झूम के दर पर आती होली

रंगों उड़े हैं गुब्बारे सारे
गली में मस्तानों की टोली है,
सारे कहते होली है, होली है।
चलो आज मनाएं होली सब।

— विजय कुमार

नया सवेरा लाने को

नया सवेरा लाने को
उगो पार्थ उगो
क्षितिज की
नवीन परिभाषा गढ़ने को
समय की रफ्तार संग
चुनौतियों और बाधाओं पर
विजयी गीत गाने को

काल दे रही चुनौतियां असंख्य
दुर्भिक्ष, प्रलय, झंझावात, तूफान में
डटे रहो वीर साहसी
अनंत आकाश की सीमा का
निस्सीम विस्तार पाने को

युगधर्म है संकट में
नायक हो तुम समय के
रुको ना अब तुम झुको ना अब तुम
कमर कसो बेड़िया खनकाओ
प्रत्यंचा पर वाण चढ़ा लो

घड़ी प्रणय की बीत चुकी है
बारी जंग की आई है
चलो उठो अब कुच करो तुम
नया सवेरा लाने को

— अशोक आशीष

स्मार्टफोन

आज मोबाइल ही
हट्टा-कट्टा बन बैठा है
खाया पिया है बहुत कुछ इसने
पर स्मार्ट ही कहलाता है

यह हाथ की घड़ी खा गया..
यह टॉर्च की लाइट खा गया..
यह चिट्ठी-पत्री संदेशे खा गया
यह किताबें पोथी तक खा गया

यह रेडियो, टेप रिकॉर्डर खा गया
यह कैमरा और केलकुलेटर खा गया
पड़ोस की दोस्ती, नुक्कड़ की यारी खा गया
मेल मिलाप और हमारा वक्त खा गया

सारा सुकून और चैन खा गया
रिश्ते खा गया, याददाश्त खा गया
शरीर की तंदुरुस्ती और फुर्ती खा गया
और इतना कुछ खा स्मार्ट हो गया

अब आदमी पागल
और फोन हो गया स्मार्ट ...
कभी फोन वायर से बंधा था
और लोग आजाद थे
आज इंसान कैद स्मार्टफोन में है
जुबान हो गई बंद है सब टच में व्यस्त हैं
लेकिन स्मार्ट का खेल तो देखो
टच में कोई नहीं है।

— शुभेंदु

अस्तित्व

महिला दिवस पर महिलाओं को समर्पित कविता

इस जगत में आप मां, बहन, बेटी, पत्नी किसी की हैं
और उम्मीद, आशा, तमन्ना भी उसी की है।

जमाना याद करता है जब आप नहीं होती हैं
और इज्जत भी नहीं होती है जब आप होती हैं।

जमाने वाले संभल जाओ, अत्याचार बंद करो
कहीं आप नहीं होंगे जब ये नहीं होंगी।

— जनार्दन प्रसाद

ऋतुराज

मन झूम उठा फूली बगिया-सा
धरा आज हर्षायी है
अंबर इठलाता है पिक-सा
फिजा बहार सी छाई है
रंग फागुन का उतरा है नहीं
नवरंग विहंग उड़ता है अभी
तरु से झूम मिलती है लता
सूना हिय नव-यौवन भरता

तलैया तालों से मिलती
नदिया सागर से मिलती
खिल उठी हैं सारी कलियां
महक उठी हैं सारी गलियां
देखो-देखो आया बसंत
हरो जन की दुविधा अनंत
सारी दिशा पुकारे आज
आया मनभावन ऋतुराज

— शैलेंद्र राम

चित्र वीथिका

दिनांक 16/02/2018 को मालदा मंडल राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान कवि सम्मेलन के दृश्य



छायाचित्र

दिनांक 16/02/2018 को मालदा मंडल राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह के दौरान स्वागत नृत्य, बढ़ते कदम के विमोचन एवं मंडल रेल प्रबंधक के संबोधन के दृश्य

